❶

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 48, अंक 10 — एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 30 दिसम्बर, 2024 से रविवार 5 जनवरी, 2025

विक्रमी सम्वत् 2081 — सृष्टि सम्वत् 1960853125

दयानन्दाब्द : 201 — पृष्ठ : 8

वार्षिक शुल्क : 250 रुपये — दूरभाष: 23360150

ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्वावधान में 98वें स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर

भव्य शोभायात्रा एवं विशाल जन सभा सम्पन्न

स्वामी श्रद्धानन्द के समय की परिस्थितियां आज और विकराल रूप ले रही हैं-हमें जागना और जगाना होगा - सुरेन्द्र कुमार आर्य

स्वयं में मानव कल्याण की एक संस्था थे - स्वामी श्रद्धानंद - आचार्य योगेश भारद्वाज

मनुस्मृति के विशुद्ध स्वरूप से समाज को परिचित कराने वाले वैदिक विद्वान हैं, धर्मपाल आर्य - गौतम खट्टर

देश और दुनिया में सम्मिलित रूप से चलेंगे 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के कार्यक्रम

महर्षि दयानंद की शिक्षाओं को स्वामी श्रद्धानंद ने किया चरितार्थ - स्वामी प्रणवानंद सरस्वती

प्रेरणा और संकल्प लेने का महान अवसर है- स्वामी श्रद्धानंद का बलिदान दिवस - सुरेन्द्र रैली

हिन्दू बढ़ेंगे तो बचेंगे - रिश्ते बचाओ - देश बचाओ - विनय आर्य

आर्य समाज के 150 वर्षों का इतिहास राष्ट्र सेवा, मानव निर्माण और परोपकार के स्वर्णिम अध्यायों से भरा हुआ है। जिसमें महान विभूतियों के बलिदान की एक लंबी श्रृंखला के बीच स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज का बलिदान अपने आप में प्रेरणा का एक प्रमुख स्तम्भ है। गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी 25 दिसंबर 2024 को आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानंद जी का 98वां बलिदान दिवस विशाल शोभायात्रा और सार्वजनिक सभा के रूप में हर्षोल्लाह से संपन्न हुआ। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली की समस्त आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं, गुरुकुल-कन्या गुरुकुलों, वेद प्रचार मंडलों, आर्य वीर दल, वीरांगना दल, शिक्षण संस्थाओं और हर आयु वर्ग के स्त्री-पुरुषों ने सम्मिलित होकर आर्य समाज के विशिष्ट संगठन का परिचय दिया। सर्वप्रथम स्वामी श्रद्धानंद बलिदान भवन, नया बाजार में आर्यजनों ने हवन किया और विश्व मंगल की कामना की। इसके उपरांत विशाल शोभायात्रा का आयोजन हुआ। शोभायात्रा नया बाजार से प्रारंभ होकर लाहौरी गेट, खारी बावली, फतेहपुरी, चांदनी चौक, टॉउन हॉल के सामने स्वामी श्रद्धानंद जी की मूर्ति के सामने से होते हुए नई सड़क, चावड़ी बाजार, हौज कॉजी चौक, अजमेरी गेट होते हुए रामलीला मैदान में सार्वजनिक सभा के रूप में परिवर्तित हुई। जिसमें महर्षि दयानंद सरस्वती की जय-जयकार, स्वामी श्रद्धानंद जी अमर रहें और आर्य समाज अमर रहे, भारत माता की जय के गगन भेदी नारों से, भजनों से, यज्ञ की झांकी से, वीर, वीरांगनाओं के व्यायाम प्रदर्शनों से शोभायात्रा को अत्यंत महत्वपूर्ण स्वरूप प्रदान किया गया।

शोभायात्रा का शुभारंभ पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के अधिकारियों द्वारा सभी उपस्थित आर्यजनों पर फूलों की वर्षा से हुआ। शोभायात्रा में आए हुए श्रद्धालुओं का स्वागत सम्मान करते हुए, दिल्ली ग्रेन मर्चेंट्स एसोसिएशन, दाऊ दयाल आर्य वैदिक स्कूल, आर्य समाज नया बांस, आर्य समाज चावड़ी बाजार, कूचा शिव मंदिर, लाल कुआं मर्चेंट्स एसोसिएशन, दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार

- शेष पृष्ठ 3, 4, 5 एवं 7 पर

रिश्ते बचाओ-देश बचाओ अभियान को प्रमुखता से संचालित करने का आह्वान

रिश्ते बचाओ-देश बचाओ अभियान को आन्दोलन रूप में संचालित करने के आह्वान एवं अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली की घोषणा से उत्साहित होकर हाथ उठाकर सहमति प्रदर्शित करते हुए मंचस्थ अधिकारी एवं बलिदान दिवस पर उपस्थित आर्यजनों से भरा पण्डाल

देववाणी-संस्कृत

आत्मा ज्ञान और सौन्दर्य के साथ उदित होता है

वेद-स्वाध्याय

केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।।
-ऋ० 1।6।3; साम० ऊ 6।3।14; अ० 20।69।19
ऋषिः- मधुच्छन्दाः।। देवता-इन्द्र।। छन्दः-गायत्री।।

शब्दार्थ- हे इन्द्र आत्मन्! तू **मर्याः** = इस मरण-शील **अकेतवे** = और ज्ञानरहित अवस्था वाले शरीर में **केतुं कृण्वन्** = ज्ञान और जीवन लाता हुआ तथा **अपेशसे** = इस अरूप, असुन्दर शरीर में **पेशं कृण्वन्** = रूप-सौन्दर्य लाता हुआ **उषद्भिः** = अपनी जागरण-शक्तियों के साथ **सं अजायथाः** = उदय होता है- पुनर्जागरण और पुनर्जन्म में उदय होता है।

विनय- यह शरीर तो मर्य है, मुर्दा है। इस समय भी मुर्दा है। जब इस शरीर को अर्थी पर उठाकर जलाने के लिए ले-जाया जाता है, उस समय यह शरीर जैसा मुर्दा होता है वैसा ही यह अब भी है, परन्तु इस समय यह मुर्दा इसलिए नहीं दीखता, क्योंकि इन्द्र (आत्मा)ने अपनी चेतनता, अपनी सुन्दरता इसमें बसा रखी है।

हे इन्द्र आत्मन्! जब यह शरीर सुषुप्तावस्था में होता है तब तुम ही इसमें से अपनी जागरण-शक्तियों को समेट लेते हो, अपने में खींच लेते हो, अतः तुरन्त हमारा चलना फिरना, बोलना आदि सब व्यापार बन्द हो जाता है। सदा चलनेवाले मन के भी सब सङ्कल्प विकल्प बन्द हो जाते हैं। यह शरीर जड़वत् हो जाता है और जब तुम फिर अपनी जागरण रश्मियों को शरीर में फैला देते हो तो फिर मनुष्य उठ बैठता है, सोचना-विचारना शुरू हो जाता है, मनुष्य फिर चलने-बोलने लगता है। इस 'अकेतु' शरीर में फिर चेतना दीखने लगती है-उसका खोया हुआ जाग्रत्-रूप फिर उसमें आ जाता है। हे इन्द्र! सुषप्ति में तो तुम अपनी जागरण -शक्तियों को केवल समेट लेते हो, पर जब तुम इस शरीर को छोड़ ही देते हो तब क्या होता है? तब यह शरीर अपने असली रूप में-मिट्टी के ढेर के रूप में दीख पड़ता है। न इसमें ज्ञान होता है और न रूप। हे इन्द्र! इस मिट्टी के बर्तन में अमृत होकर तुम ही भरे हुए हो। इस मिट्टी में जो रूप, सुडौलता आ गई है, सुन्दर अवयव संनिवेश हो गया है यह तुम्हारे व्यापने से हुआ है इस मिट्टी की मूर्त्ति मे शव की अपेक्षा जो इतनी चेतनता दिखाई देती है वह तुम्हारे सामने से ही हुई है। यह शरीर जो मुर्दा होने पर इतना अपवित्र समझा जाता है कि इसे छू लेने से स्नानादि शौच करना पड़ता है वही असल में मुर्दा शरीर, हे परम-पावन इन्द्र! इस समय तुम्हारे समाये रहने के कारण, तुम्हारे पवित्र संस्पर्श से इतना पवित्र हुआ-हुआ है। तुम्हारा इतना अद्भुत माहात्म्य है। मनुष्य तुम्हारे इस माहात्म्य को क्यों नहीं देखता?

आज हम स्पष्ट देख रहे हैं कि इन सब मुर्दा-जड़ शरीरों में चेतनता लाते हुए और इन अरूपों में रूप-सौन्दर्य प्रदान करते हुए तुम्हीं अपनी जाग्रत्-शक्तियों के साथ उदय हुए-हुए हो, तुम ही आये हुए हो।

-:साभार:-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

आपके तनाव और अवसाद का एक कारण यह तो नहीं

मोबाइल नोमोफोबिया किस बला का नाम है?

पिछले कुछ सालों में साइंस ने खूब तरक्की की है। दुनिया स्मार्ट हो गई है और लैंडलाइन फोन से अब लोगों के हाथों में स्मार्टफोन आ चुके हैं। लेकिन जहां दुनिया ने तरक्की की है, तो वहीं दुनिया की इस तरक्की ने लोगों के लिए कुछ अनजानी परेशानियां भी खड़ी कर दी हैं। पहले फोन का इस्तेमाल सिर्फ लोगों से बातचीत करने के लिए हुआ करता था। लेकिन अब लगभग सभी कामों के लिए फोन का इस्तेमाल किया जाता है। लेकिन जरूरत और सुविधा के लिए ही नहीं, बल्कि दुनिया में बहुत से लोग ऐसे हैं जो बिना जरूरत के अपना काफी समय फोन पर बिता देते हैं, बजाय उन कामों को करने के लिए जो उनके लिए जरूरी हैं। फोन चलाने वालों को पता भी नहीं चलता कि स्मार्टफोन का एक नोटिफिकेशन उनके दिन का कितना वक्त खराब कर देता है।

सूचना के लिहाज से देखें तो हमने तार और पत्र से यहाँ तक सफर तय किया है। एक इंसान होने के लिए हमें सूचना की आवश्यकता पड़ती रहती है, चाहें सूचना बुरी हो या अच्छी। पहले सूचना पाने के लिए समय लगता था। पत्र लिखा वो डाक से 10 दिन में मिलता था। लेकिन अब ऐसा नहीं है, दूर देश में बैठा कोई भी व्यक्ति एक मैसेज टाइप करता है और अगले क्षण वो हमें मिल जाता है। हम अपने फोन के दिन भर वाइब्रेट करने के इतने आदी हो गए हैं कि अगर कुछ देर को नोटिफिकेशन न आए तो लगता है जैसे आज कुछ कमी है। या फिर कई बार नोटिफिकेशन आने के कारण इतने परेशान हो जाते हैं कि फोन को साइलेंट मोड पर कर देते हैं।

सूचना के लिहाज से देखें तो हमने तार और पत्र से यहाँ तक सफर तय किया है। एक इंसान होने के लिए हमें सूचना की आवश्यकता पड़ती रहती है, चाहे सूचना बुरी हो या अच्छी। पहले सूचना पाने के लिए समय लगता था। पत्र लिखा वो डाक से 10 दिन में मिलता था। लेकिन अब ऐसा नहीं है, दूर देश में बैठा कोई भी व्यक्ति एक मैसेज टाइप करता है और अगले क्षण वो हमें मिल जाता है। हम अपने फोन के दिन भर वाइब्रेट करने के इतने आदी हो गए हैं कि अगर कुछ देर को नोटिफिकेशन न आए तो लगता है जैसे आज कुछ कमी है। या फिर कई बार नोटिफिकेशन आने के कारण इतने परेशान हो जाते हैं कि फोन को साइलेंट मोड पर कर देते हैं।

जबकि शुरू में, हमें यह जानकर थोड़ा-बहुत उत्साह होता था कि हमारे पास एक नया नोटिफिकेशन आया है, लेकिन अब नोटिफिकेशन एक तनाव कारक लगते हैं। अभी कुछ दिन पहले एक किस्सा सुना, एक महिला किसी कार्यक्रम में शामिल होने के लिए तैयार होकर अपनी मनपसंद ड्रेस में एक रील अपलोड की। वह किसी को पसंद नहीं आई , उसने कमेंट कर दिया कि ड्रेस बेकार है और वह बिलकुल भी सुंदर नहीं दिख रही। जैसे ही यह नोटिफिकेशन आया, उसने कमेंट पढ़ा और ड्रेस फाड़ दी।

जरा सोचिए! कोई दूसरा हमें जैसा बताएगा, हम उसे वैसा ही स्वीकार कर लेंगे? हमें वह सुंदर या आकर्षक नहीं लगे, ये परेशानी उसकी है या हमारी? जाहिर सी बात है, परेशानी उसकी थी लेकिन दुखी वह महिला हो गई। कारण एक नोटिफिकेशन।

अगर दुनिया को अलग भी रख दें, तो साल 2021 देश में हर सात में से एक व्यक्ति अलग-अलग तरह के मानसिक विकारों से पीड़ित पाया गया था। जिसमें सबसे ज्यादा रोगी सोशल मीडिया पर अधिक एक्टिव रहने वाले पाए गए थे। हैरानी की बात है कि करीब 12 करोड़ के लगभग लोग इस तरह के अवसादों से पीड़ित हैं और इनकी संख्या 1990 की तुलना में चार गुना हो गई ।

ये सच है कि सोशल मीडिया और स्मार्टफोन लोगों की जिंदगी में एक अहम जरूरत बन चुका है। हर कोई इस पर निर्भर है। दोस्तों से चैटिंग हो या फिर ऑफिशियल मेल, हर काम इससे संभव हो जाता है। लेकिन फिर भी कभी-कभी आपका मोबाइल ही आपके लिए परेशानी खड़ी कर देता है। आप रिश्तेदार के यहाँ हैं या किसी दुखद हादसे में सांत्वना प्रकट कर रहे हैं। लेकिन अचानक फोन रिंग करने लगता है। आपके फोन में कई एप्स होती हैं जिनकी नोटिफिकेशन बार-बार आती रहती हैं। कई बार कुछ मौकों पर शर्मिन्दगी का भी सामना करना पड़ता है। इसके अलावा भी इतनी सारी एप्स और एक ग्लोबल दुनिया का हिस्सा होने के बावजूद इंसान खोया-खोया रहता है। दूसरा मोबाइल नोटिफिकेशन चेक करने की लत लोगों को इस कदर पागल कर रही है कि वे बीच सड़क पर भी फेसबुक, इंस्टाग्राम और वॉट्सएप के नोटिफिकेशन चेक कर रहे हैं। यह लत अब इंसानों में दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। बल्कि अब लोग अपने हर जरूरी कामों के साथ भी नोटिफिकेशन जैसे जिंदगी का हिस्सा सा बन गए हैं। हालत ये हो गए हैं कि अगर घर में पांच सदस्य हैं लेकिन आपस में नजरें मिलाकर बात नहीं हो रही है, एक दूसरे को बिना देखें ही सवाल कर देते हैं और सामने वाला भी अपने फोन में टकटकी लगाकर जवाब दे देता है। यानी घर में तकनीक ने एक दूसरे से कोसों दूर कर दिए।

आज भले ही प्रभाव कम दिखाई देते हैं लेकिन अगर संतुलन न बना पाए तो गारंटी के साथ कह सकते है कि आबादी का बड़ा हिस्सा खुद को विचलित और चिंता से भरे जीवन में शामिल करने जा रहा है। अगर आपको बेवजह मोबाइल देखने या थोड़ी देर के लिए भी मोबाइल के दूर होने पर बेचैनी महसूस होती है तो सावधान हो जाइए। ये मानसिक बीमारी के लक्षण हैं। मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ ने इसे नोमोफोबिया का नाम दिया है। नोमोफोबिया यानी नो-मोबाइल-फोन तो फोबिया। जबकि फोन का एक नोटिफिकेशन उस जरूरी काम से आपकी अटेंशन हटा देता है। आपका दिमाग बार-बार कंसंट्रेशन लूज करता है। आप एक काम पर फोकस करके पूरा नहीं कर पाते। दोबारा से इस कंसंट्रेशन के साथ काम करने में आपका काफी टाइम बर्बाद हो जाता है। अगर आपने कोई लॉन्ग टर्म गोल सोचा है और आप फोन लगातार इस्तेमाल करते हैं, तो फिर उस गोल को पूरा होने में काफी मुश्किल हो सकती है। इसलिए काम के समय डाटा ऑफ कीजिए, वरना ये बीमारी बढ़ती चली जाएगी। *- सम्पादक*

प्रथम पृष्ठ का शेष

मंडल, पूर्वी दिल्ली वेद प्रचार मंडल, आर्य समाज रानी बाग एवं सैनिक विहार के अधिकारियों ने, श्री प्रेम अरोड़ा परिवार सहित, महावर ब्रदर्स के मालिक श्री शुभम महावर परिवार सहित ने, आर्य समाज पुल बंगश के मंत्री, श्री अखिलेश भारती तथा सदस्य श्री अनिल दीवान ने, मेसर्स गोविंदराम हासानंद ने, आर्य समाज बाजार सीताराम के श्री बाबूलाल, परिवार सहित, आर्य वीर दल के अधिकारियों ने फूलों, फूल मालाओं एवं पीत वस्त्रों से स्वागत किया और विभिन्न खाद्य पदार्थों से उपलब्ध प्रसाद वितरित किया, सभी को नमन तथा धन्यवाद। शोभायात्रा के मार्ग में यज्ञ वाली झांकी द्वारा पूरे रास्ते प्रसाद बांटा गया तथा इसी तरह आर्य समाज कृष्णा नगर के अधिकारियों ने यात्रा के मार्ग पर रुक-रुक कर मीठे चावलों का प्रसाद बांटा, इनका भी धन्यवाद।

रामलीला मैदान में सार्वजनिक सभा का शुभारंभ स्वामी श्रद्धानंद जी के परोपकारी कार्यों को आधार बनाकर मधुर प्रेरक भजनों से प्रारंभ हुआ। इस अवसर पर आर्य केंद्रीय सभा के प्रधान श्री सुरेंद्र रैली जी ने स्वामी श्रद्धानंद जी के बलिदान दिवस की शोभायात्रा को ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि 98 वर्षों से लगातार यह यात्रा आर्य समाज की आन-बान और शान का प्रतीक रही है। उन्होंने आर्यवीर दल, आर्य समाजों के अधिकारी और कार्यकर्ताओं का मनोबल और उत्साह बढ़ाते हुए सब के प्रति आभार व्यक्त किया और गुरुकुल शिक्षा पद्धति को और आगे बढ़ाने के लिए आर्यजनों से अनुरोध किया, सभी ने खड़े होकर गायत्री मंत्र, ईश्वर स्तुति प्रार्थना, उपासना, मंत्रों का पाठ किया और कार्यक्रम को गति प्रदान की। इस अवसर पर स्वामी प्रणवानंद जी महाराज ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी के सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में दिए गए शिक्षा पद्धति के उपदेशों का वर्णन करते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानंद ने इन सभी को चरितार्थ करते हुए अनेकानेक गुरुकुलों की स्थापना की, जिसमें स्वामी श्रद्धानंद जी द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी प्रमुख है। स्वामी श्रद्धानंद जी के 100वें बलिदान दिवस पर हम सबको संकल्प लेना चाहिए की गुरुकुलों की श्रृंखला को और गति देने का काम करें। वक्ताओं के इस क्रम में आज सभी युवा विद्वान उपस्थित थे, श्री विनय आर्य जी ने श्री मोहित गौड जो राजस्थान से पधारे थे, उनका परिचय देते हुए बताया कि आपने वेद के विज्ञान में गणित के सूत्रों की व्याख्या, वेदों के आधार पर की और इसकी प्रेरणा आपको सत्यार्थ प्रकाश से प्राप्त हुई, इस अवसर पर वैदिक विज्ञान के सूत्रों का निरुपण करने वाले मोहित गौड जी को सम्मानित किया गया। उनके पिताजी को भी सम्मानित किया गया और इस अवसर पर मोहित गौड जी ने स्वामी श्रद्धानंद, महर्षि दयानंद सरस्वती के परोपकारी और श्रेष्ठ कार्यों को श्री कृष्ण की नीतियों पर एक कविता भी सुनाई। इस क्रम में श्री कृतेश पटेल जी (अहमदाबाद), जो पहले अकाउंटेंट थे, उन्होंने किस तरह से सत्यार्थ प्रकाश से प्रेरणा लेकर आर्य समाज में प्रवेश किया और अब महर्षि के मिशन को आगे बढ़ाने के लिए समर्पण किया है, इसका वर्णन सुनाया, आपने स्वामी श्रद्धानंद जी द्वारा लिखित पुस्तक हिंदू संगठन का गुजराती में अनुवाद प्रकाशित किया और उस पुस्तक का विमोचन भी किया गया। कार्यक्रम में गत वर्षो की भांति आर्य समाज के कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया गया, जिनमें पंडित ब्रह्मानंद शर्मा आर्य कार्यकर्ता पुरस्कार - श्री बनवारी लाल जी को, श्री वेद प्रकाश कथूरिया स्मृति पुरस्कार - श्रीमती मीना देवी धर्मपत्नी श्री देवानंद आर्य को तथा श्री रमेश चंद्र बंसल आर्य मेधावी विद्यार्थी पुरस्कार - कु० नम्रता सुपुत्री आचार्य उदयभानु जी को प्रदान किए गए।

इस अवसर पर उपस्थित श्री अनिल गुप्ता जी कार्यवाह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपने उद्‌बोधन में महर्षि की 200वीं जयंती पर उन्हें नमन करते हुए कहा कि जिस समय उनका जन्म हुआ उस समय देश गुलाम था, चारों तरफ युद्ध चल रहे थे, धर्मांतरण हो रहा था, ऋषि दयानंद ने सब कुछ देखा, यज्ञ को आरंभ किया, ओम ध्वज को घर-घर तक पहुंचाया, यज्ञोपवीत और संस्कारों को सार्वजनिक किया और स्वामी श्रद्धानंद जी ने हिंदुओं के कन्वर्जन को रोका और शुद्धि आंदोलन किया, इतनी निर्भीकता से देश की रक्षा के लिए उन्होंने अपना बलिदान दिया। इस अवसर पर हम उन्हें नमन करते हैं, आपने बांग्लादेश में हो रहे अत्याचार को लेकर ट्रंप का उदाहरण दिया कि आज अगर ट्रंप बांग्लादेश की बात करता है, तो कहीं ना कहीं यह स्वामी श्रद्धानंद का ही तप है, जो आज हिंदू गर्व से सिर उठाकर आगे बढ़ रहा है, श्री विनय आर्य जी महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने आत्माराम अमृतसरी का बाबा भीमराव अंबेडकर जी की शिक्षा को लेकर दी गई छात्रवृत्ति का उदाहरण देते हुए कहा कि आज स्वामी श्रद्धानंद जी द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी जो अपने आप में आर्य समाज की एक महत्वपूर्ण संस्था है। वह आर्य समाज का था, आर्य समाज का है और आर्य समाज का ही रहेगा। आपने हिंदू संगठन का हवाला देते हुए कहा कि

- जारी पृष्ठ 4-5, 7 पर

परिवर्तन - पुस्तक के पीछे लेखक के मनोभाव

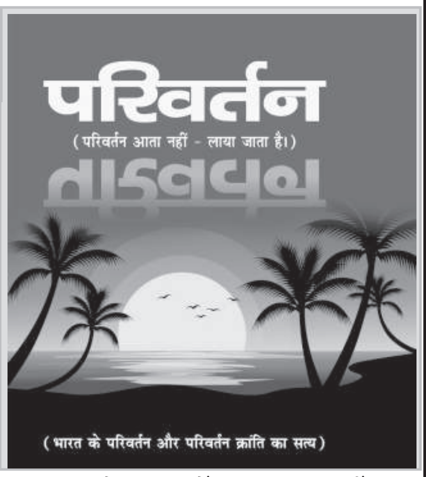

गतांक से आगे -

कोई सृष्टि का इतिहास 2000-3000 वर्ष पुराना बताता है, कोई 5000 वर्ष पुराना। दयानन्द सृष्टि के इतिहास के बारे में क्या बताते हैं, उसके पीछे का आधार क्या है और उस समय के गौरवशाली भारत की परिस्थितियां क्या थी, यह आज की युवा पीढ़ी को जानना बेहद आवश्यक है। हम दयानन्द को भारत की आमूल-चूल परिवर्तन क्रांति का सूत्रधार कहते हैं। किन्तु लोग अगर उनको केवल आर्य समाज का संस्थापक के परिचय मात्र से ही संतोष कर लें तो लगता है यह उचित नहीं। ऐसे एक महान् और संपूर्ण व्यक्तित्व के स्वामी को, जिसके व्यक्तित्व का एक छोटा-सा हिस्सा किसी भी मानव के लिए प्रेरणा का पुंज हो सकता है, जिसके जीवन का एक ही उद्देश्य, मानव कल्याण, राष्ट्र कल्याण और विश्व कल्याण रहा हो। वे ऐसे विराट व्यक्तित्व के स्वामी थे, जिनकी आभा से अपना और पराया कोई भी बच न सका, न लोक-लाज की चिन्ता, ना राज-पाठ की, ना अमीर का मान, ना गरीब का अपमान, स्त्री-पुरुष को बराबर मानकर, तथाकथित उच्च वर्ण में जन्म लेकर भी जातिवाद की छाया जिस पर कभी ना पड़ सकी, स्वाभिमान से भरा हुआ निराभिमानी, सरस्वती की विशालता समेटे, जहर पीकर, पत्थर खाकर, ईंटों के वार सहकर, सदा सत्य के पथ के अनुगामी को भी आज हम जान ना पाएं तो लगेगा कि कही न कहीं हम ही दोषी हैं। जिनका एक-एक पल मानव जाति और राष्ट्र के चिन्तन को समर्पित रहा, देश की दारुण अवस्था पर रुदन और अश्रु का समुद्र आंखों में सहेजकर अकेले सतपथ पर निरन्तर बढ़ने वाला निष्कलंक ब्रह्मचारी, अकेले हर बाधा को पार करने की निरन्तर इच्छाशक्ति रखने वाला, शांत पथिक, जिसने सब साधनों के होते हुए कभी निजी जीवन के लिए लेशमात्र भी इच्छा नहीं रखी, मांगा तो ईश्वरीय ज्ञान "वेद" के लिए मांगा, घास पर सोया, धरती पर सोया, मिला सो खाया, गंगा की रेती को बिस्तर बनाकर, एक ईंट को सिर के नीचे, एक पांव के नीचे........ ये ही था घर जिसका, उसने मांगा तो अनाथ की रक्षा के लिए मांगा, मांगा तो निर्बल के लिए मांगा, मांगा तो राष्ट्र के लिए मांगा, मांगा तो मानव जाति की उन्नति के लिए मांगा, ऐसे महान् व्यक्तित्व को नमन करने के लिए दिल ना चाहे तो क्या चाहे ? इच्छा थी कि ऐसे विराट व्यक्तित्व के स्वामी को इस दुनिया का बच्चा-बच्चा जाने, ताकि वह भी दयानन्द की हजारों विशेषताओं में से किसी एक को अपने जीवन में धारण करके निहाल हो सके। कांटों से भरे पथ पर सत्य की खोज के लिए बिना किसी पते, हजारों मील की यात्रा करने वाले, किस से क्या मिलेगा, न पता होते हुए भी सत्य को जानने की इच्छा से हर पल सीखने वाले, किस ग्रंथ से क्या निकलेगा, न पता होते हुए भी निरन्तर पढ़ने वाला, कल भोजन कहां मिलेगा-मिलेगा भी या नहीं, कल कहां रहेंगे-कोई रहने की जगह भी देगा या नहीं, यह सोचे बिना बेझिझक, केवल सत्य बात को निर्लेप भाव से कह देने की अद्‌भुत क्षमता रखने वाले 6 फिट 9 इंच के आकर्षक शरीर के स्वामी के महान् व्यक्तित्व में क्या गजब का आकर्षण था, क्या उनके जीवन को जानने का अधिकार आज के युवा का नहीं ? अगर है तो उसे बताएगा कौन ? ये ही विचार इसको लिखने के पीछे रहे।

इस पुस्तक में प्राचीन आर्यावर्त का शानदार वैभव काल, क्यों भारत को विश्वगुरु और सोने की चिड़िया कहा जाता था और फिर इसके लगातार पतन के कारण और पतनकाल की स्थितियां। साथ ही ऋषि दयानन्द के आने के समय बन चुकी हमारी परिस्थितियां और ऋषि दयानन्द का चिंतन और उनके द्वारा और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज द्वारा किए गए परिवर्तन क्रांति के कार्यों को सिलसिलेवार बताने का प्रयत्न किया है। शायद ये प्रयत्न आने वाली पीढ़ी को अपने गौरव काल और वैभव काल की याद दिलवा सके और हम उसे पुनः प्राप्ति की इच्छा रख सकें और अंत में आज जो स्थितियां हमें उस गौरव काल की जगह पतनकाल की ओर ले जा रही हैं तथा खोखला कर रही हैं, जो शायद हमें स्पष्ट दीख नहीं रही, दीख भी रही हैं तो हम उनके परिणामों पर विचार नहीं कर पा रहे। उन्हीं विशेष बातों पर ध्यान दिलाने की कोशिश की है, अगर हम इन समस्याओं को ध्यान से समझ सके तो शायद हम उनके समाधान की ओर गहराई से ध्यान दे पाएंगे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती और उनकी महान् कृति आर्यसमाज की 150वीं जयन्ती हमें पुनः भारत को विश्वगुरु बनाने के निमित्त कार्य करने को प्रेरित कर सकें, ऐसी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है। **- विनय आर्य**

महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

- क्रमशः

पुस्तक घर बैठे/ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगिन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
मो. 09540040339, 011-23360150

विशाल शोभा यात्रा-स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

स्वर्ग कामो य
स्वर्ग की कामना करने वाले य

काला पानी

धूम्रपान

महर्षि दयानन्द के अनन्य शिष्य, महान राष्ट्रभक्त, शिक्षाविद् आर्य समाज के नेता
स्वतंत्रता सेनानी, अमर बलिदानी महान दलितोद्धारक एवं शुद्धि अभियान के प्रणेता
स्वामी श्रद्धानन्द

98वां स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस - भव्य शोभायात्रा एवं विशाल जन सभा - अतिथि महानुभावों का सम्मान

श्री अनिल गुप्ता जी, श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी, आचार्य योगेश भारद्वाज जी, श्री गौतम खट्टर जी का सम्मान एवं शोभा यात्रा सम्मिलित रहे आर्य संन्यासियों का आशीर्वाद प्राप्त करते स्वामी श्रद्धानन्द जी की वेश-भूषा में श्री आशीष अरोड़ा जी

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती पर जारी स्मृति डाक टिकट

आर्य संस्थाएं अधिक से अधिक खरीदकर करें प्रयोग करें

भारतीय डाक India Post

विशेष अनुरोध - सरकार द्वारा जारी किए जाने वाले स्मृति डाक टिकट सीमित संख्या में और एकमुश्त केवल बार ही प्रकाशित किए जाते हैं। अत: समस्त आर्यजनों, आर्यसमाजों, आर्य संगठनों, विद्यालयों, गुरुकुलों, प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं से निवेदन है कि अपने पास स्मृति रूप में डाक टिकट रखने तथा जन साधारण में प्रचार-प्रचार के लिए अधिकाधिक संख्या में खरीदकर प्रचार करें, अपने दैनिक पत्र-व्यवहार, स्पीड पोस्ट, रजिस्टर्ड डाक आदि में प्रत्येक स्थान पर उपयोग करें, जिससे कि हजारों-लाखों आखों और हाथों से होते हुए यह प्रचारित हो और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जन्म वर्ष की स्मृति रूप में सुरक्षित रहे।

आप अपनी संस्था के लिए जितनी डाक टिकटें प्राप्त करना चाहते हैं, कृपया उसकी संख्या के अनुसार अपनी सहयोग राशि 5/- प्रति डाक टिकट की दर से निम्नांकित बैंक खाते में जमा करा दें या राशि का चैक/बैंक ड्राफ्ट 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते भेजें।

DELHI ARYA PRATINIDHI SABHA

A/c No. : 2009257009039 IFSC :CNRB0002009 Canara Bank New Delhi

नोट – यह डाक टिकट ऑनलाइन भी प्राप्त की जा सकती है। सम्पूर्ण भारत में होम डिलीवरी सुविधा के लिए कोड स्कैन करें लॉग-इन करें अथवा मोबाइल पर सम्पर्क करें

vedicprakashan.com
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का ऑनलाइन स्टोर
96501 83336

भारत के परिवर्तन की नींव रखने वाले ☆ महर्षि दयानन्द के अमर वाक्य ☆

कन्या का विवाह कहां करें?

वे कन्याओं को दूर देश - यानि दूरी के स्थान पर विवाह करने के पक्ष में हैं -

"कन्या का नाम दुहिता इस कारण से है कि विवाह दूर देश में होने से हितकारी होता है निकट रहने से नहीं।"

– सत्यार्थ प्रकाश सम० ४

9

विवाह के लिए लड़का-लड़की की प्रसन्नता आवश्यक

आधुनिक सोच का इससे बड़ा प्रमाण कौन सा हो सकता है। वे चाहते हैं जन्मपत्री से नहीं, पिता-माता की इच्छामात्र से नहीं, किन्तु प्राचीन रीति स्वयंवर जैसी उत्तम रीति से विवाह हो तो गृहस्थ उत्तम हो -

"विवाह करना लड़का, लड़की के आधीन होना उत्तम है। जो माता-पिता विवाह करना कभी विचारें तो भी लड़का, लड़की की प्रसन्नता के बिना न होना चाहिये, क्योंकि एक दूसरे की प्रसन्नता से विवाह होने में विरोध बहुत कम होता है और संतान उत्तम होते हैं।"

– सत्यार्थ प्रकाश सम० ४

10

उपरोक्त वाक्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तक "भारत के परिवर्तन क्रांति की नींव रखने वाले महर्षि के अमर वाक्य" से साभार नियमित स्तम्भ के रूप में प्रस्तुत किए जा रहे हैं। इन वाक्यों को पढ़कर आप महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के विचारों, सिद्धान्तों और आर्यसमाज की मान्यताओं से परिचित हो सकते हैं तथा सोशल मीडिया पर प्रसारित करके परोपकार में सहभागी भी बन सकते हैं। पुस्तक प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें अथवा दिया गया कोड स्कैन करें -

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
सम्पर्क सूत्र : 9540040339

साप्ताहिक स्वाध्याय

थियोसॉफी से सम्बन्ध

गतांक से आगे-

भोजन की भी दिक्कत थी। उस दिक्कत को दूर करने के लिए कर्नल अल्कॉट ने मिरेकल क्लब नाम से एक चमत्कार दिखने वाली सभा बनाई थी, परन्तु उससे भी काफी आय नहीं हुई। कुछ पुस्तकें लिखी गईं; उनसे अन्न-कष्ट दूर न हुआ। तब आखिर तंग आकर इस युगल ने थियोसॉफिकल सोसाइटी बनाने का निश्चय किया। 17 नवम्बर 1875 को सोसाइटी की स्थापना हुई। कर्नल प्रधान बने और मैडम ने मंत्राणी का कार्य संभाला। खजांची का कार्य एक लखपति को सौंपा गया, जिससे सोसाइटी के अधिकारियो की बहुत-सी चिन्ताएं दूर हो गई।

1877 में मैडम ब्लैवेट्स्की की प्रसिद्ध पुस्तक Isis unveiled प्रकाशित हुई। पुस्तक अपने ढंग की अनूठी थी। उसमें प्राचीन धर्मों का समर्थन था, ईसाइयत पर बहुत आक्षेप था, और जादू तथा चमत्कार की सम्भवता दिखाई गई थी। उस पुस्तक पर वैज्ञानिक और दार्शनिक लोगों ने अधिक्षेपाभरी दृष्टि डाली, और ईसाई खीझ गए, परन्तु सर्वसाधरण को अनूठेपन ने बहुत खेंचा। लोगों को उस पुस्तक-लेखिका की लेखनशैली अद्भुत लगी। आशा हुई कि समय और श्रम की कीमत निकल आएगी, परन्तु दैव को कुछ और ही अभीष्ट था। Isis के छपने के कुछ समय पीछे मिस्टर कोलमैन ने भी आलोचना की, जिसमें यह सिद्ध किया कि मैडम की पुस्तक में कुछ नवीनता नहीं है, सब कुछ लगभग सौ पुस्तकों से उद्धृत किया हुआ है। -**क्रमशः**

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुन: प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन www.vedicprakashan.com अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

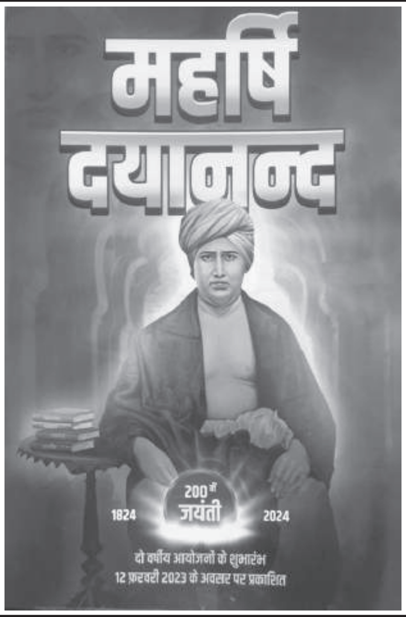

Continue From Last Issue

Relation with Theosophy

In the month of January 1878, Rishi Dayanand received this letter from America-

To the Most Honourable Pandit Dayanand Saraswati, India.

Venerated Teacher, a number of American and other students who earnestly seek after Spiritual Knowledge, place themselves at your feet and pray you to enlighten them- The boldness of their conduct naturally drew upon them public attention and reprobation of all influencial organs and persons whose worldly interests or private prejudices were linked with the established order.

We have been called atheists, infidels and pagans.

We need the assistance not only of the young and enthusiastic, but also of the wise and venerated. For this reason we come to your feet as children to a parent and say ,'Look at us, our teacher teach us what we ought to do- Give us your counsel, your aid-"

See that we approach you not in pride but humility, that we are prepared to receive your counsel to do our duty as it may be shown to us.(Sd) Henry Olcott, president of the Theosophical Society

To the most respected Pandit Dayanand Saraswati in the service of India respected Guru,

Some American and other students who are in love spiritual learning, prostrate themselves at your feet and ask for light. Their bold behavior naturally attracted public attention and opposition from newspapers and individuals whose worldly interests or personal values were bound up with the already existing situation.

We were called atheists, disbelievers and religionless. We don't just want the help of young and passionate people, we also want the help of intelligent and respected people. That's why we come at your feet like a son comes at the feet of his father, and say - Our Guru Maharaj! Look at us and tell us what we should do.

See that we do not come to your service with pride but with humility and we are ready to take your advice and follow the path shown. (Signed) Henry Alcott President,Theosophical Society

To be Continue............

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

ओ३म्

आर्य एवं राष्ट्रीय पर्वों की सूची : विक्रमी सम्वत् 2081-82 तदनुसार सन् 2025

क्र. सं.		पर्व का नाम	चन्द्र तिथि	अंग्रेजी दिनांक	दिन
1.		लोहड़ी	पौष पूर्णिमा वि. 2081	13/01/2025	सोमवार
2.		मकर-संक्रान्ति	माघ कृष्ण, 1 वि. 2081	14/01/2025	मंगलवार
3.		गणतन्त्र दिवस	माघ कृष्ण, 12 वि. 2081	26/01/2025	रविवार
4.		वसन्त-पंचमी	माघ शुक्ल, 5 वि. 2081	02/02/2025	रविवार
5.		सीताष्टमी	फाल्गुन कृष्ण, 8 वि. 2081	21/02/2025	शुक्रवार
		स्वामी श्रद्धानन्द जयन्ती	फाल्गुन कृष्ण, 9 वि. 2081	22/02/2025	शनिवार
6.	**ऋषि-पर्व**	महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव	फाल्गुन कृष्ण,10 वि.2081	23/02/2025	रविवार
7.	**ज्योति-पर्व**	शिवरात्रि (ऋषि बोधोत्सव)	फाल्गुन कृष्ण, 13 वि.2081	26/02/2025	बुधवार
8.	**वीर-पर्व**	पं.लेखराम बलिदान दिवस (वीर तृतीया)	फाल्गुन शुक्ल, 3 वि. 2081	02/03/2025	रविवार
9.	**मिलन-पर्व**	नवसंस्येष्टि (होली)	फाल्गुन पूर्णिमा, वि. 2081	13/03/2025	गुरुवार
10.		आर्य समाज स्थापना दिवस/ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा/ नवसम्वत्सर/उगाड़ी/गुड़ी पड़वा/ चैती चांद	चैत्र शुल्क, 1 वि.2082	30/03/2025	रविवार
11.		रामनवमी	चैत्र शुक्ल, 9 वि. 2082	06/04/2025	रविवार
12.		वैशाखी	बैसाख कृष्ण, 1 वि.2082	14/04/2025	सोमवार
13.		महात्मा हंसराज जयन्ती	बैसाख कृष्ण, 6, वि. 2082	19/04/2025	शनिवार
14.		पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जन्मदिवस	बैसाख कृष्ण, 13 वि.2082	26/04/2025	शनिवार
15.		विश्व पर्यावरण दिवस	ज्येष्ठ शुक्ल, 10 वि.2082	05/06/2025	गुरुवार
16.		अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस	अषाढ़ कृष्ण, 10 वि.2082	21/06/2025	शनिवार
18.		हरितृतीया(हरियाली तीज)	श्रावण शुक्ल, 3 वि.2082	27/07/2025	रविवार
19.	**वेद-प्रचार समारोह**	श्रावणी उपाकर्म-रक्षा बन्धन/ हैदराबाद सत्याग्रह दिवस	श्रावण पूर्णिमा, वि. 2082 / श्रावण पूर्णिमा, वि. 2082	09/08/2025	शनिवार
17.		स्वतन्त्रता दिवस	भादपद्र कृष्ण, 7 वि. 2082	15/08/2025	शुक्रवार
20.		श्री कृष्णजन्माष्टमी	भद्रपद कृष्ण, 8 वि. 2082	16/08/2025	शनिवार
21.		गुरु विरजानन्द दण्डी स्मृति दिवस	अश्विन कृष्ण, 8 वि. 2082	14/09/2025	रविवार
22.		गांधी जयन्ती/लाल बहादुर शास्त्री जयन्ती	आश्विन शुक्ल, 10 वि. 2082	02/10/2025	गुरुवार
23.		विजय दशमी/दशहरा	आश्विन शुक्ल, 10 वि.2082	02/10/2025	गुरुवार
24.		गुरु विरजानन्द दण्डी जन्म दिवस	आश्विन शुक्ल, 12, वि. 2082	04/10/2025	शनिवार
25.	**क्षमा-पर्व**	दीपावली (ऋषि निर्वाणोत्सव)	कार्तिक अमावस्या, वि. 2082	20/10/2025	सोमवार
26.	**बलिदान-पर्व**	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	पौष शुक्ल, 3, वि. 2082	23/12/2025	मंगलवार

नोट : देशी तिथियों में घट-बढ़ होने से पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है। - विनय आर्य, महामन्त्री

पृष्ठ 3 से आगे

103 वर्ष पहले स्वामी श्रद्धानंद जी ने जो हिंदू संगठन पुस्तक में जो लिखा था, उसीके अनुसार देश में उद्घोष हो रहे हैं, कि बटेंगे तो कटेंगे लेकिन यहां पर मैं कहना चाहूंगा कि घटेंगे तो कटेंगे, इसलिए रिश्ते बचाओ, देश बचाओ, परिवार बचाओ, देश बचाओ । वरना स्थितियां विपरीत होती रहेंगी। आर्य समाज का 150वां स्थापना दिवस मुंबई में मनाया जाएगा और पूरे देश में और दिल्ली में भी धूमधाम से मनाया जाएगा, इसकी आपने सार्वजनिक घोषणा की।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी ने अपने विशेष उद्बोधन में स्वामी श्रद्धानंद जी को उनके 98वें बलिदान दिवस पर गुरुकुल कांगड़ी का कुलपिता और राष्ट्रहित में अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाला बताते हुए कहा कि हम आर्यो के स्वामी श्रद्धानंद प्रेरणा स्रोत थे। राष्ट्र के प्रति अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले स्वामी श्रद्धानंद ने देश की आजादी में अद्भुत योगदान दिया। आज सावधान रहने की जरूरत है, दोबारा देश पर आँच ना आए, यह हमारी जिम्मेदारी है, देश को जातियों में बांटने का, घुसपैठियों को आश्रय देने का, अल्पसंख्यकों के ऊपर जो जगह-जगह पर प्रहार किया जा रहे हैं, इसलिए संगठित होकर एक सामूहिक प्रयास की जरूरत है, कोई लेख-लिखे , कोई प्रचार करे, कोई शिक्षण संस्थानों को समय दे, धन दें और समर्पित होकर सेवा करे, लेकिन अशीर्वाद तो सबको देना ही चाहिए, यही हमें आज संकल्प लेना चाहिए, लेकिन कहीं ऐसा ना हो कि देर हो जाए और बाद में पछताना पड़े। उन्होंने अपने संबोधन में एक प्रेरक वाक्य बोलते हुए कहा **''ख्वाहिशों से गिरते नहीं फूल झोली में, अपने कर्म की शाख को हिलाना होगा। कुछ नहीं होगा कोसने से अंधेरों को, अपने हिस्से का दिया खुद जलाना होगा।**

देश में अभी जागरण का समय चल रहा है, स्वाभिमान की अंगड़ाई लेकर देश जागृत हो रहा है, भारत की सरकार भी इस दिशा में प्रयासरत है, आर्य समाज के प्रचार-प्रसार का भी यह उपयुक्त समय है। महर्षि की 200वीं जयंती और आर्य समाज का 150 वां स्थापना दिवस और स्वामी श्रद्धानंद का 100वां बलिदान दिवस, क्या हम यह इतना महत्वपूर्ण कालखंड ऐसे ही जाने देंगे, नहीं आर्य समाज पिछले कुछ वर्षो से अपनी संगठन शक्ति में तेजी से सुधार कर रहा है, आवश्यकता है महर्षि के हर शिष्य को एक प्रकल्प, एक मिशन से जुड़ने की, सभी लोग इस परिवर्तन क्रांति में भागीदार बनें, स्वामी श्रद्धानंद का जीवन दोषों को छोड़कर सद्गुणों को अपनाने का संदेश देता है। उनकी पुस्तक कल्याण मार्ग का पथिक, मेरे पिता को पढ़ने का संकल्प लें और अंत में उन्होंने कहा-**कोशिश कर हल निकलेगा, आज नहीं तो कल निकलेगा, अर्जुन के तीर-सा सध, मरुस्थल से भी जल निकलेगा।**

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित हुए श्री योगेश भारद्वाज जी ने 'छोड़ो कल की बातें, कल की बात पुरानी' गीत से अपने उद्बोधन का आरंभ किया। जिसमें उन्होंने कहा कि अगर इस पर हम चिंतन करें तो हमारी संस्कृति, हमारे संस्कार, हमारे पूर्वज और बहुत कुछ छोड़ना होगा। लेकिन हम इसका अनुकरण नहीं कर सकते। हमें अपने वर्तमान को संभालना है, तो भविष्य भी ठीक होगा, लेकिन प्रेरणा हमें अतीत से लेनी होगी, जिसका वर्तमान खराब हो जाता है, उसका भविष्य भी अच्छा नहीं होता, अपने देश के ज्वलंत मुद्दों को उठाते हुए उन्होंने अंबेडकरवादी जो नीले पटके पहन करके घूम रहे हैं, पेरियारवाद आदि का उदाहरण देते हुए कहा की जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है, स्वामी दयानंद की प्रेरणा से स्वामी श्रद्धानंद अपने आप में एक संस्था थे। उन्होंने उत्तराखंड के गांव के गांव शुद्ध किए और गुरुकुल शिक्षा को आपने वरीयता देते हुए कहा कि आजकल जो भी चल रहा है, उसका सामना करना पड़ेगा और शुद्धि के कार्य को आगे बढ़ना पड़ेगा, अपने बंगाल का उदाहरण दिया और पश्चिमी उत्तर प्रदेश की बात करते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानंद की आज पहले से भी ज्यादा जरूरत हैं। पूर्वोत्तर के राज्यों का भी अपने उदाहरण देते हुए कहा कि हमें शुद्धि के कार्य को अपनाना होगा, दलितों को गले लगाना होगा, कम से कम दो मुसलमान और दो ईसाइयों की शुद्धि करने का सब संकल्प लें।

श्री विनय आर्य जी ने आर्य समाज के 150वें वर्ष और महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती के 2 वर्षीय आयोजनों के समापन समारोह के भव्य और विशाल कार्यक्रम की घोषणा करते हुए कहा कि आने वाले 2025 नवंबर में यह कार्यक्रम दिल्ली में होगा और यह कार्यक्रम इतना विशाल, विराट और भव्य होगा कि आर्य समाज के150 वर्षो के इतिहास में यह अदभुत और अनुपम होगा।

वक्ताओं के इस क्रमें प्रखर वक्ता श्री गौतम खट्टर जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि आज के इस समय में तीन क्षेत्रों में कार्य करने की सबसे ज्यादा जरूरत है, क्योंकि युवाओं का भटकना, धर्मांतरण की ओर बढ़कर विधर्मी बनना अपने आप में एक चिंता की बात है, इसलिए स्वामी श्रद्धानंद जी ने शिक्षा के कार्य इतनी शक्ति के साथ किये कि जो आने वाली पीढियों को लगातार प्रेरणा दे रहे हैं, आपने स्वामी श्रद्धानंद जी द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी के लिए जो उन्होंने तप, त्याग और साधना की थी, उसका वर्णन करते हुए कहा कि बिछड़ों को और पिछड़ों को गले लगाना है और स्वामी श्रद्धानंद ने हमें यही सिखाया है, उन्होंने लाखों लोगों को शुद्ध किया। आपने विशुद्ध मनुस्मृति का वर्णन करते हुए दिल्ली सभा एवं आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी के विषय में बताया कि किस तरह से आपने राजस्थान हाई कोर्ट में पूरे आठ जजों की पीठ के सामने मनुस्मृति के उन बिंदुओं को कुशलता से प्रस्तुत किया। जिससे विरोधी पक्ष के वकील एक भी जवाब न दे सके थे और आज बाबा भीमराव अंबेडकर की जो मूर्ति है वह अपनी जगह पर हाईकोर्ट परिसर में ही स्थित है, हिंदू एकत्र हों और हिंदुओं को मिलकर के राष्ट्र को बचाना है और राष्ट्र को बचाने के लिए गुरुकुल के प्रचारकों को आगे करना है, तो इस तरह से आपने स्वामी श्रद्धानंद जी को नमन किया।

इस अवसर पर आर्य वीर दल की शाखाओं को भी पुरस्कृत किया गया। स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस की शोभायात्रा में जिन वीर, वीरांगनाओं ने पूरी निष्ठा के साथ प्रदर्शन किया, अनुशासन दिखाया और एकरूपता गणवेश में और सभी नियमों का पालन करते हुए एक आदर्श प्रस्तुत किया, उनमें भगत सिंह शाखा, प्रीत विहार-स्वामी श्रद्धानंद शाखा-नजफगढ़, महात्मा नारायण स्वामी शाखा-शास्त्री पार्क, राजगुरु शाखा-रजोकरी, ओम प्रकाश त्यागी शाखा मंगोलपुरी, लाला हरदयाल शाखा-आदर्श नगर, आर्य वीरांगना दल दुर्गा भाभी शाखा-प्रीत विहार, रानी लक्ष्मीबाई शाखा-मंगोलपुरी, कल्पना चावला शाखा-जनकपुरी सी-3, सभी शाखाओं के शिक्षकों, सहित आर्यवीर-वीरांगनाओं सभी को सम्मानित किया।

इस अवसर पर सर्वश्री धर्मपाल आर्य, उषा किरण कथूरिया, कीर्ति शर्मा, अरुण प्रकाश वर्मा, जोगेंद्र खट्टर, हरीओम बंसल, सत्यानंद आर्य, कन्हैयालाल आर्य (मंत्री, परोपकारिणी सभा), आचार्य संतोष आर्य, मनीष भाटिया, आदि महानुभाव मंच को शोभायमान कर रहें थे। कार्यक्रम में भोजन एवं जल व्यवस्था को सुन्दर और सुचारु बनाने में शाहबाद मोहम्मदपुर से सर्वश्री ओम दत्त पांचाल, सुधीर गुप्ता, लोकराम आर्य, चरण सिंह सोलंकी, परविंदर सोलंकी, सुनील सोलंकी, वीरेंद्र सोलंकी, शकुंतला पांचाल, उषा पांचाल, राजबाला सोलंकी, रानी सोलंकी, संगीता, धर्मवीर, यशवीर सोलंकी, बबीता सैनी, आर्य समाज सागरपुर से सर्वश्री मांधाता सिंह आर्य, राकेश कुमार आर्य, अनुभव आर्य, राहुल शर्मा, अनिल देशवाल, आर्य समाज इंदिरापुरम से श्री वीरेंद्र कुमार शर्मा आर्य समाज विकास नगर से सर्वश्री देवानंद आर्य, मीना देवी, सत्य देव शर्मा, राम अवतार, कृष्ण कुमार आर्य, शंकर लाल, रागिनी देवी, तान्या आर्या, वीरेन कुमार आदि ने भरपूर सहयोग दिया, जिसका नेतृत्व श्री सुखवीर सिंह आर्य, मंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, अपने सहयोगी श्री अजय तनेजा जी के साथ कर रहे थे, सभी का करबद्ध धन्यवाद। विभिन्न कार्यो की व्यवस्थाओं में श्रीमती सरोज यादव, सर्वश्री सुरेन्द्र चौधरी, डॉ. मुकेश आर्य, संजीव कोहली, गजेंद्र चौहान तथा संजीव खेत्रपाल, आचार्य जयप्रकाश शास्त्री, आर्य मिडिया सेन्टर तथा आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोगियों ने यथा संभव योगदान दिया, शोभा यात्रा के मार्ग पर, सारे समूह के अन्तिम छोर पर, श्री यज्ञपाल सोलंकी एवं श्री रविन्द्र सैनी के नेतृत्व में चार सहयोगियों ने सड़क की सफाई कर अपना कर्तव्य निभाया, सभी का धन्यवाद।

- सतीश चड्डा, महामन्त्री

शोक समाचार

आचार्य दयासागर जी का निधन

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान, सार्वदेशिक सभा की सेवा ईकाई अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तरंग सदस्य, दयानन्द सेवाश्रम थांदला झाबुआ (म.प्र.) के संचालक एवं सार्वदेशिक आर्य वीर दल म.प्र.-छत्तीसगढ़ के पूर्व अधिकारी आचार्य दयासागर जी का 29 दिसम्बर, 2024 को हृदयघात से आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ थांदला (म.प्र) में सम्पन्न हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 1 जनवरी, 2025 को सम्पन्न हुई, जिसमें सार्वदेशिक सभा, दिल्ली सभा, दयानन्द सेवाश्रम संघ, निकट वर्ती आर्यसमाजों एवं प्रान्तीय सभाओं के अधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्रीमती पुष्पलता वर्मा का निधन

आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी की वरिष्ठ सदस्या एवं महिला आर्यसमाज की पूर्व अधिकारी श्रीमती पुष्पलता वर्मा जी का दिनांक 28 दिसम्बर, 2024 को आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 29 दिसम्बर को पूर्ण वैदिक रीति के साथ तिलक विहार शमशान घाट पर सम्पन्न हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 31 दिसम्बर को आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकासपुरी में सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त बपरिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

⑧

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

सोमवार 30 दिसम्बर, 2024 से रविवार 5 जनवरी, 2025
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 2-3-4/01/2025 (वीर-शुक्र-शनिवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 01, जनवरी, 2025

प्रतिष्ठा में,

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर दस लाख रुपये की पुरस्कार प्रतियोगिता

कॉमिक्स पढ़ें और जीतें लाखों के ईनाम

प्रथम पुरस्कार : 1 लाख रुपये एवं विशेष उपहार।
द्वितीय पुरस्कार : 51 हजार एवं विशेष उपहार (2)
तृतीय पुरस्कार : 31 हजार एवं विशेष उपहार (3)
चतुर्थ पुरस्कार : 5100/- एवं विशेष उपहार (25)
पांचवा पुरस्कार : नकद 2100/- रुपये (100)
छठा पुरस्कार : नकद 1000/- रुपये (250)
सातवां पुरस्कार : नकद 500/- रुपये (250)

प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार विजेता के विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार

सर्वाधिक प्रतियोगिता सहभागी वाले विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार

नियम व शर्तें -

1. इस प्रतियोगिता में अधिकतम 18 वर्ष तक की आयु के विद्यार्थी भाग ले सकते हैं। सभी प्रश्नोत्तर इसी कॉमिक पुस्तिका में हैं।
2. उत्तर पत्र पूर्ण रूप से भरकर दिए गए कॉलम में अपना व विद्यालय का पूरा नाम व पता (पिन कोड सहित), फोन नम्बर, आयु, अवश्य भरें तथा पते के अन्त में राज्य का नाम अवश्य लिखें। (यदि विद्यालय के माध्यम से भाग न ले रहे हों तो सम्बन्धित संस्था का नाम अवश्य भरें। जैसे गुरुकुल, आर्य समाज, आर्यवीर दल की शाखा आदि।)
3. प्रश्नपत्र को भरकर 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली 110001' के पते पर (प्रश्नोत्तरी को फोल्ड करके लिफाफे में) भेजें अथवा विद्यालय/संस्था की ओर से सभी प्रश्न उत्तर के साथ कॉमिक एकत्रित करके भी भेजे जा सकते हैं।
4. दिनांक 1 सितम्बर 2025 से पूर्व प्राप्त होने वाले उत्तर पत्र ही प्रतियोगिता में सम्मिलित होंगे। यह तिथि आगे बढ़ाने का अधिकार संयोजक का होगा।
5. उत्तर पत्रों की पूर्ण जांच के पश्चात् सभी ठीक उत्तर वाले पत्रों को पुरस्कार योजना में सम्मिलित किया जाएगा। पुरस्कार संयोजक समिति द्वारा बनाई गई तीन सदस्यीय निर्णायक समिति द्वारा अन्तिम रूप से घोषित किया जाएगा।
6. निर्णायकों की समिति का निर्णय अन्तिम व मान्य होगा तथा उसे कहीं भी चुनौती नहीं दी जा सकेगी।
7. पुरस्कृत/विजेता बच्चों के नाम दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र 'साप्ताहिक आर्यसन्देश' में दिए जायेंगे तथा पृथक पत्र द्वारा सूचित किया जाएगा एवं बच्चों के नाम सभा द्वारा संचालित वेबसाइट **www.thearyasamaj.org** पर प्रदर्शित किये जायेंगे।
8. सभी पुरस्कार 'अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2025' में दिल्ली के अवसर पर प्रदान किए जायेंगे जिसकी सूचना विजेताओं को अग्रिम भेजी जाएगी। यह योजना हिन्दी तथा अन्य भाषाओं की कॉमिक पर समान रूप से लागू होगी।
9. इस कॉमिक को सुरक्षित रखें क्योंकि प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार लेने हेतु कॉमिक की प्रति लाना / भेजना अनिवार्य होगा। - ***संयोजक***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह